प्रातः क्लास ओमशान्ति पिताश्री 17-10-67

~~मीठे~~ ओमशान्ति। मीठे2 बच्चे यहां आते है रुहानी बाप के पास शिक्षा लेने। फिर रिफ्रेश होकर वापस जाते है। तो जरूर जाकर कुछ करके दिखाना है। एक एक बच्चे को सर्विस का सबुत देना है। जैसे कोई2 बच्चे कहते है हमारी सेन्टर खोलने दिल है। गांवों में भी सर्विस तो करनी है ना। तो बच्चों को सदैव यह ख्याल रहना चाहिए हम मनसा, वाचा, कर्मणा, तन मन धन से ऐसे सर्विस करें जो भविष्य 21 जन्मों का एवजा बाप से मिले। यही ओना है। हम कुछ करते हैं, कोई को ज्ञान ~~देते~~ देता हूं। सारा दिन यही ख्यालात आनी चाहिए। कलसेन्टर खोलो परन्तु घर में स्त्री पुरुष का आवनतम्र होनी चाहिए। कोई धमसान न रहे। सन्यासी लोग घर के धमसान से निकल जाते हैं। डकेंट क्लियर कर चले जाते है। फिर गवर्मेन्ट उनको रोकती है क्या। वह तो सिर्फ पुरुष ही निकलते हैं। अभी कोई2 माताएं भी निकलती है। जिसका कोई धनी-धोनी नहीं होता है। या वैराग्य आ जाता है। उन्हों को भी सन्यासी पुरुष लोग बैठ सिखलाते हैं। इन द्वारा अपना धंधा करवाते है। पैसे आद सारे उनके पास रहते हैं। वास्तव में घर-बार छोड़ा तो पैसे रखने की दरकार नहीं रहती। तो अब बाप तुम बच्चों को समझाये रहे हैं। हर एक की बुद्धि में आना चाहिए हमको बाप का परिचय देना है। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। बेसमझ है। तुम बच्चों के लिए बाप का फरमान है मीठे2 बच्चों तुम अपन को आत्मा समझो। सिर्फ पंडित नहीं बनना है। बहुत पुरुषार्थ करना है। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। कहते है बाबा हम घड़ी2 भूल जाते है। सेकल्प आ जाते हैं। बाबा कहते है वह ~~तो~~ तो आवेंगे ही। तुमको बाप की याद में रह सतोप्रधान बनना है। आत्मा जो इमप्युर है उनको परम पिता परमात्मा को ही याद कर प्युर बनना है। बाप ही बच्चों को डैरेक्शन देते हैं। हे फरमानवरदार बच्चे तुमको फरमान करता हूं मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कटेंगे। पहले2 बात ही यह सुनाओ। निराकार शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो। मैं पतित पावन हूं। मेरी याद से विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय नहीं न कोई बताते हैं...... सन्यासी आदि है। निमंत्रण देते है कान्फ्रेन्स में आये शामिल हो, अब योग से किसका कल्याण तो होना नहीं है। ढेर योगाश्रम है। जिनको इस योग का बिलकुल ही पता नहीं है। बाप को ही नहीं जानते। बेहद का बाप ही आकर योग सिखलाते है। बाप तुम बच्चों को आप समान बनाते हैं। जैसे मैं निराकार हूं ~~टेम्प~~ टेम्परी इस तन में आता हूं। मेरा तो यह शरीर नहीं है। टेम्परी शरीर का आधार लेकर आये इस मुख द्वारा बच्चों को समझाता हूं। माता भी है ना। कहते हैं तो दोनो ना। शास्त्रों में तो क्या2 लिखा दिया है। भाग्यशाली रथ तो जरूर मनुष्य का ही होगा। बैल को तो नहीं कहेंगे। बाकि कोई घोड़े आद की बात नहीं। न लड़ाई आद को कोई बात है। तुम जानते हो माया से ही हमको लड़ाई करनी है। गाया भी जाता है माया ते ~~हारे~~ हार है...... तुम बहुत अच्छी रीत समझाये सकते हो। परन्तु अभी सिख रहे हैं। कोई सिखते2 भी गिर पड़ते है। एकदम पेट पर जाते हैं। कोई लुन-पानी, ~~खिट~~ खिट2 में हो पड़ते है। दो ~~बहनें~~ बहनों का भी आपस में बनता नहीं है। लुणपानी हो पड़ते। तुम्हारे कोई भी आपस में खिट-पिट न होनी चाहिए। खिट2 होगी तो बाप कहते यह क्या सर्विस करेंगे। बहुत अच्छे2 नम्बर वन, टु का भी ऐसे हाल हो जाता है। अभी माला बनाई जाये तो कहेंगे यह डिफेक्टेड माला है। इन में अजन यह यह अवगुण है। ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा सर्विस भी कराते रहते है। डैरेक्शन देते रहते हैं। देहली में घेराव डालो। सिर्फ एक को थोड़े ही करना है। आपस में मिल कर राय करनी है। सब एक को मत होनी चाहिए। बाबा तो एक है मददगार बिगर थोड़े ही काम करेंगे। तुम सेन्टर्स खोलते हो, मदद करने वाले है? कहते है हां बाबा। अगर मदद देने वाले न होंगे तो कुछ कर न सकेंगे। घर में भी मित्र-सम्बन्धी आद2 आते हैं। भल गाली दे। उनका तो डर रखना न है। गाली तो खानी ही है। अभी तुम जैसे बन्दरों के गांव में हो। वह तुमको काटते खाते ~~रहते~~ रहेंगे। ~~ब~~ बन्दर बुद्धि आपस में एक दो को काटते रहते हैं। तो हर बात में इकठी राय होनी चाहिए। सेन्टर्स खोलते है,

तो भी सब मिल कर लिखे बाबा हम ब्राह्मणी के राये से यह काम करते हैं। सिन्धी भाषा में कहते हैं ब त बारहें। बारह होंगे तो और हो अच्छी राय निकलेंगी। कहाँ तो एक दो हैं राय भी नहीं लेते हैं। ऐसे2 भी हैं। सिर्फ एक की राय निकलती रहती। बाकि लुन-पानी। अच्छा ऐसे कोई काम हो सकता है क्या। बाबा कहेंगे हम क्या कर सकते हैं जब तक तुम्हारा आपस में संगठन ही नहीं तो तुम इतना बड़ा कार्य कैसे कर सकेंगे। छोटी दुकान, बड़ी दुकान भी होता है ना। आपस में संगठन करते हैं। ऐसे कोई नहीं कहते बाबा आप मदद करो। ऐसे तो सब सेन्टर खोलते जाये कहे बाबा मदद करो। पहले तो मददगार बनानी चाहिए फिर बाबा कहते हैं हिम्मते बच्चे, मददे बाप। पहले तो अपने मददगार बनाओ। बाबा इतना करते हैं, बाकि आप मदद दें। ऐसे नहीं पहले आप मदद करो फिर हम आपस में करेंगे। नहीं। हिम्मते मर्दा मददे खुदा.. उनका भी अर्थ नहीं समझते। पहले तो बच्चों को हिम्मत चाहिए। कौन2 क्या मदद देते हैं, पोता मेल सारा लिखेंगे फलाने2 यह देते हैं। बाकि आप। कायदे सिरेलिखा देंगे। बाकि ऐसे थोड़े ही ऐसे एक एक कहेंगे हम सेन्टर खोलते हैं पैसा दो। ऐसे तो बाबा नहीं खोल सकता है क्या। ऐसे तो पैसे ही बरबाद कर दे। ऐसे नहीं हो सकता। कमिटी को आपस में मिलना होता है। तुम्हारे भी नम्बरवार हैं ना। कोई तो बिल्कुल कुछ ही नहीं समझते। कोई बहुत हर्षित होते रहते हैं। बाबा समझाते हैं इस ज्ञान में बहुत खुशी रहनी चाहिए। एक ही बाप, टीचर गुरु मिलता है। तो खुशी होनी चाहिए दुनिया में यह बातें कोई नहीं जानते। शिव बाबा ही ज्ञान का सागर पतित-पावन, सर्व की सदगति दाता है। सब का पादर भी एक ही है। यह और कोई की बुधि में नहीं है। अभी तुम बच्चें समझते हो वह ही नालेजफुल, लिबरेटर गाईड हैं। तो बाप की मत पर चलना पड़े। आपस में मिल कर राय करनी है। खर्चा करना हो आधा भी लाभ, ~~आधा~~ ~~...~~ ~~समझते हैं~~ पहले नाम पर कहें। ज्यारा आटा बहुत हैं। आज मदद देने तैयार होंगे कल बदल जावेंगे। बाप तो हैं सत्य। बहुत फिर कह कर बदल जाते हैं। बाप तो ऐसे नहीं करेंगे ना। यह भी कोई में अक्ल नहीं कि कार्य कैसे चलाना चाहिए युक्ति से। हर एक सेन्टर में आपस मिल राय करनी चाहिए। एक की मत पर तो नहीं चल सकती। मददगार सब चाहिए। यह भी बुधि चाहिए ना। तुम बच्चों को घर2 में मेसेन्ज देना है। पूछते हैं शादी में निमंत्रण मिलता है, जावें? बाबा कहते हैं क्यों न जाओ। जाकर अपनी सर्विस करनी है। बहुतों को कल्याण करो। भाषण भी कर सकते हो, मौत सामने खड़ा है। बाप कहते है मामेकं याद करो। यही सब पाप तुम्हारे हैं ना। बाप को ही गाली देते रहते। बाप से तुमको बेमुख कर देते। सन्यासी लोग अपन को परमात्मा कहलाते हैं, सो और ही तुम्हारा बेरा डुबोये देते हैं। सारे भारत का बेरा किसने डुबोया है, बाप कहते हैं तुम्हारे इन कलयुगी गुरुओं ने। अनेका अनेक गुरु हैं। जो तुमको बाप से बेमुख करते हैं। गायन भी है विनाश काले विप्रीत बुधि। किसने कहा? बाप ने खुद कहा है मेरे से प्रीत बुधि नहीं है। विनाश काले विप्रीत बुधि हैं। मुझे जानते ही नहीं। जिनकी प्रीत बुधि हैं वह ही मुझे याद करते हैं। वह ही विजय पावेंगे। मत प्रीत है परन्तु याद नहीं करते हैं। तो भी कम पद पाये लेंगे। बाप बच्चों को डैरेक्शन देते है मुल बात है सब को मेसेन्ज देना। बाप को याद करो तो पावन बनो। पावन दुनिया का मालिक बनो। ड्रामा अनुसार बाबा को लेना भी बुढ़ा शरीर ही होता है। वानप्रस्त में प्रवेश करते हैं। मनुष्य वानप्रस्त अवस्था में ही भगवान से मिलने मेहनत करते हैं। भक्ति में तो समझते हैं जप तप यह सब भगवान से मिलने के रास्ते हैं। कब तक मिलेगा वह भी कुछ पता नहीं। जन्म-जन्मान्तर भक्ति करते आये हैं। भगवान तो कोई को मिलता ही नहीं। यह नहीं समझते बाप आवेंगे ही तब जब पुरानी दुनिया को नया बनाना होगा। रचता बाप ही है। चित्र तो है, परन्तु त्रिमूर्ति में शिव बाबा को नहीं दिखाते तो जैसे कि गला काट दिया। बाकि क्या काम का। शिव बाबा बिगर दिखाते हैं ब्रह्मा, विष्णु शंकर को

17-10-67

गला कटा हुआ है। बाबा बिगर निधणके बन पड़ते हैं। बाप आकर तुमको धणका बनाते हैं। 21 जन्म तुम धणके बन जाते हो। कोई तकलीफ नहीं रहती। तुम भी कहेंगे जब तक बाप न मिला था तो हम भी बिलकुल निधणके तुच्छ बुधि थे। कहते भी हैं वो गाड फादर परन्तु जानते नहीं हैं कि बाबा से वर्सा कैसे मिलता है। पतित-पावन कहते हैं परन्तु वह कब आवेंगे यह नहीं जानते। पावन दुनिया है ही नई दुनियां बाप कितना सिम्पल समझाते हैं। तुमको भी समझ में आता है हम बाप के बने हैं। स्वर्ग के मालिक जरूर बनेंगे। शिव बाबा है बेहद का मालिक। बाप ने ही आकर सुख शान्ति का वर्सा दिया था। सतयुग में सुख था। बाकि सभी आत्माएं शान्ति धाम में थी। अभी इन बातों को तुम समझते हो। शिव बाबा क्यों आया होगा। ऐसे ही भानी थपने। जरूर नई दुनिया रचने, पतित को पावन बनाने आये होंगे। काम किया होगा। मनुष्य बिलकुल ही घोर अंधियारे में हैं। मायावी बुधि थी जिसने शास्त्र बनाई। जिस से यह यह कर्मकाण्ड निकले। कह देते हैं व्यास भगवान ने बनाई। तुमको अब कन्दर लगता है। व्यास भगवान ने फिर बैठ यह झूठी शास्त्र बनाई है। बाप कहते हैं यह भी ड्रामा में नूंध हैं। तुम बच्चों को बाप बैठ जगाते हैं। तुमको इस सारी ड्रामा का पता है। कैसे नई दुनिया फिर पुरानी होती है। बाप कहते हैं और सभी कुछ छोड़ एक बाप को याद करो। तुमको कोई मेहनत नहीं आती। यह समझाना पड़ता है। यह तो जैसे बन्दर

(५) राक्षस बन गये हैं। ड्रामा अनुसार माया का राज्य भी होना ही है। अब फिर बाप कहते हैं बाप कहते हैं मीठे 2 बच्चों अब यह चक्र पुरा होता है। अब तुमको ईश्वरीय मत मिलती है। उस पर चलना है। अब 5 विकारों की मत पर नहीं चलना है। आधा कल्प तुम माया के मत पर चल तमोप्रधान बन गये हो। अब मैं तुमको सतोप्रधान बनाने आया हूं। सतोप्रधान और तमोप्रधान का खेल है। ग्लानी की कोई बात न ~~रहो। कहते हैं भगवान ने यह ... नाटक ही क्यों बनाया। क्यों का सवाल ही नहीं।~~ यह तो ड्रामा का चक्र है जो रिपीट होता रहता है। ड्रामा अनादी है। अभी है कलयुग। सतयुग पास्ट हो गया है। अब फिर बाप आये हैं। बाबा बाबा कहते रहो। तो कल्याण होता रहेगा। बाबा कहते हैं यह अति गुह्य रमणिक बातें हैं। कहते हैं शेर के दूध लिए सोने के बर्तन चाहिए। सोने की बुधि कैसे बनेंगी। आत्मा में मन बुधि है ना। आत्मा कहती है मेरी बुधि अब बाबा के तरफ है। मैं बाबा को बहुत याद करता हूं। बैठे2 बुधि और तरफ चली जाती है ना। बुधि में धंधा-धोरी याद आता होगा। तो तुम्हारी बात जैसे सुनेंगे नहीं। मेहनत है। जितना 2 मौत नजदीक आता जावेगा तुम याद में बहुत रहेंगे। मरने समय सभी कहते हैं भगवान को याद करो। अब बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम सब की वाणप्रस्त अवस्था है। वापस जाना है। इसलिए अब मुझे याद करो। दूसरे कोई बात न सुनो। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा तुम्हारे सिर पर है। तुम सभी अजामिल पतित हो। सबसे नम्बरवन अजामिल कौन है- यह साधु-सन्त आद। शिव बाबा कहते हैं इस समय सभी अजामिल हैं। सबसे बड़ा पाप करते हैं जो कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। गाली देते हैं। पत्थर भित्तर में परमात्मा है। बाकि उनमें और तुम्हारे में फर्क क्या रहा। परन्तु समझते थोड़े ही हैं। मुल बात है याद की यात्रा। और आपस में प्रेम होना चाहिए। एक दो से राय लेनी है। बाप प्रेम का सागर हैं ना। तुम भी आपस में बहुत प्यारे होने चाहिए। देहीअभिमानी बन आत्मा को याद करना है। बहन भाई का सम्बन्ध भी तोड़ना पड़ता है। भाई बहन से भी योग न रखो। एक बाप से ही योग रखो। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकारी दृष्टि खलास हो जायेंगी। कर्म इन्द्रियों से कोई विकर्म न करना है। मनसा में तूफान जरूर आवेंगे। यह बड़ी मंजिल है। बाबा कहते हैं भल हाथ लगाओ पर देखो कर्म ईन्द्रियां धोखो देती हैं तो हाथ लगाना भी छोड़ दो। खबरदार रहो। अगर उल्टा काम कर लिया तो खलास। पढ़ें तो बैकुण्ठ का मालिक.. मेहनत के सिवाय थोड़े ही कुछ हो सकता है। बहुत मेहनत है। देह सहते देह के सर्व सम्बन्धों को छोड़ना है। कोई 2 तो बन्धन मुक्त भी फंसे रहते हैं। ओम।